वार्षिक 150/- रुपये   जून 2025   वर्ष 27   अंक 08   पृष्ठ - 28   मूल्य 15/-रु.

गोसम्पदा

LiFE
Lifestyle for Environment

LiFE
Lifestyle for Environment

गोमाता राष्ट्र के सतत् विकास का प्रमुख आधार : पू. गुरुजी

सम्पादकीय

गोलवलकर जी की पुण्यतिथि (पांच जून) पर विशेष

गोमाता राष्ट्र के सतत् विकास का प्रमुख आधार : पू. गुरुजी

आध्यात्मिक– अहिंसक राष्ट्र भारत के सभी नागरिक, विशेषरूप से हिन्दू यह भलीभांति जानते हैं कि गोमाता–गोवंश संरक्षण–संवर्धन में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का अप्रतिम योगदान रहा है। संघ और विश्वहिन्दू परिषद द्वारा गोवंश की उपयोगिता–महत्व, जो हमारे वेदों, पुराणों, उपनिषदों आदि में वर्णित है, को वर्तमान में वैज्ञानिक कसौटियों पर जांच–परखकर राष्ट्रीय स्तर पर जनमानस के समक्ष रखने का गंभीर–विशेष प्रयास किया गया और अभी भी किया जा रहा है। सुफलस्वरूप आज संपूर्ण देश में गोमाता – गोवंश के प्रति जन–जाग्रति स्पष्टतः दृष्टिगोचर हो रही है। इस पवित्र–पावन कार्य में संत समाज सहित अनेक सामाजिक सांस्कृतिक संस्थाएँ भी अपने – अपने ढंग से निरंतर महत्वपूर्ण कार्य कर रही हैं, जो स्वागतयोग्य है।

ध्यान रहे, केंद्र सरकार तथा अनेक राज्य सरकारें भी इस क्षेत्र में कार्य करने के लिए सभी प्रकार का सहयोग प्रदान कर लोगों को प्रेरित कर रही हैं। अब केंद्र सरकार द्वारा तो कई योजनाएं प्रारंभ कर यथार्थ घरातल पर ठोस पहल भी की गई है, जो प्रशंसनीय है। बावजूद इसके गोमाता – गोवंश मनुष्य सहित संपूर्ण सृष्टि के लिए हर दृष्टि से परमकल्याणकारी है, इसलिए गोवंश मंत्रालय बनाया जाना अनिवार्य है ताकि पूरे देश में गोवंश संरक्षण–संवर्धन और गोवंश आधारित खेती से अधिक–से–अधिक नागरिकों–ग्रामीणों को जोड़ा जा सके। वस्तुतः इस प्राकृतिक पद्धति या सनातनकाल से चली आ रही जीवनशैली से इस समय दिखाई दे रही विकराल समस्याओं का स्वतः समाधान भी होता हुआ परिलक्षित होगा।

संघ के द्वितीय सरसंघचालक पूज्य गोलवलकर जी (गुरुजी) गोवंश–रक्षा के लिए विशेष आग्रही थे। वे गोवंश– संरक्षण के संदर्भ में तत्कालीन केंद्र सरकार द्वारा बनाई गई एक समिति के सदस्य भी थे। श्री गुरुजी का स्पष्टरूप से कहना था कि **''गोमाता (पंचगव्य) राष्ट्र के सतत् विकास का सर्वाधिक महत्वपूर्ण आधार है।''** वास्तव में गाय का **दूध–दही और घी** मानव स्वास्थ्य के लिए अतिशय महत्वपूर्ण आहार हैं, जो अतुलनीय भी हैं। साथ ही पर्यावरण संतुलन बनाए रखने में **'घी'** का अत्यधिक योगदान है, जो वैज्ञानिक अनुसंधानों से प्रमाणित हो चुका है। ऋषि–मुनियों द्वारा किये गये शोधों के अनुसार तो उचित पद्धति से **दूध–दही–घी** के सेवन से मनुष्य कभी बीमार ही नहीं होगा, वशर्ते वह सात्विक जीवन जी रहा हो। इस ढंग से जीते हुए वह हमेशा निरोगी रहकर परिवार, समाज और राष्ट्रहित में महनीय भूमिका निभाता हुआ अपने परम लक्ष्य को भी प्राप्त कर सकता है।

इसी प्रकार **गोमूत्र में विशेष औषधीय गुण** होते हैं, जिससे आज मनुष्य की असाध्य बीमारियों को ठीक किया जा रहा है। इसके अलावा गोमूत्र से बनाए गये कीटनाशकों से फसलों को सभी प्रकार के रोगों से बचाया जा सकता है। इसी दृष्टिकोण से **''गोमूत्र से गोअर्क''** बनाने के अनेक **पेटेंट'** भी प्राप्त कर लिए गये हैं। साथ ही सभी लोग यह भी भलीभांति जानते–समझते हैं कि **गोबर ''भूमि'' का प्राकृतिक आहार है,** जो भूमि की **उर्वरा शक्ति"** बनाए रखने में पूर्ण सक्षम है, हजारों वर्षों से यह प्रयोग–पद्धति स्वयंसिद्ध है। इसीलिए कहा गया है–**''गोमये वस्ते लक्ष्मी'',** जो अक्षरशः सत्य है। अतः उपर्युक्त गुणों के आधार पर स्पष्टरूप से प्रमाणित होता है कि पंचगव्य (गोमाता)) सभी पहलुओं से मानव सहित संपूर्ण सृष्टि के संरक्षण हेतु अनिवार्य है।

यथार्थ में गोमाता के माहात्म्य और अलौकिक–दिव्य गुणों को पूज्य गुरुजी भलीभांति जानते थे, इसलिए उन्होंने गोवंश–संरक्षण हेतु प्राणपण से संघर्ष–प्रयत्न किया, जिसे शब्दों में लिखना संभव नहीं है।

(सम्पादक)

गोसम्पदा

वर्ष - 27 अंक-08 जून - 2025 पृष्ठ - 28

संरक्षक :
हुकुमचंद सावला जी

दिनेश उपाध्याय जी
अखिल भारतीय गोरक्षा प्रमुख
संकट मोचन आश्रम, सै. 6,
रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-22
मो. : 9644642644
ईमेल : gosampada@gmail.com

सम्पादक : देवेन्द्र नायक
संकट मोचन आश्रम, सै. 6,
रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-22
मो. : 8130049868 कार्या. 011-26174732
ईमेल : gosampada@gmail.com

परामर्शदाता : प्रो. गुरुप्रसाद सिंह जी
मो. : 9838900596

प्रकाशक : राजेन्द्र प्रसाद सिंहल जी
मो. : 9810055638

प्रचार-प्रसार प्रमुख : डॉ. नरेश शर्मा जी
9811111602

व्यवस्थापक : रामानन्द यादव
मो. : 9958710672 कार्या. : 011-26174732

साज-सज्जा : सुमन कुमार

वैधानिक सूचना

'गोसम्पदा' से संबन्धित सभी वाद प्रकाशन तिथि से 3 माह के अंदर केवल नई दिल्ली स्थित न्यायालय में मान्य होंगे

सहयोग राशि

एक प्रति : रु. 30/-
वार्षिक : रु. 150/-
आजीवन : रु. 1500/-

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ
मानव चेतना को जागृत करने वाली "गोमाता लक्ष्मी"	04
पंचगव्य चिकित्सा के विशेष अनुभव	08
प्रकृति का सहायक-सहचर हमारा गोवंश	12
गोमाता केवल शब्दों में, आत्मा में नहीं	15
दबंगों से चरागाह की जमीन मुक्त कराने की मांग	18
गोवंश हत्या-तस्करी रोकने के लिए प्रशासन प्रभावी कार्यवाही करे	19
सिलीगुड़ी से दिल्ली लाया जा रहा मांस से भरा कंटेनर जब्त	19
गोवंश के प्रबंधन पर विशेष ध्यान दिया जाएगा : रेखा गुप्ता	20
GOMATA : The Divine Backbone of India	21
VIBHOOTI : The Sacred Science of Cow-Derived Ash	24

हार्दिक निवेदन

सभी गोभक्त–गोप्रेमी बंधुओं से करबद्ध अनुरोध है कि वे इस पत्रिका का सदस्य अवश्य बनें और अन्य गोभक्तों को भी सदस्य बनायें। कृपया सभी लोग अपना वार्षिक अथवा आजीवन सदस्यता शुल्क निम्नलिखित बैंक व खाता नंबर में जमा कराएं–

पंजाब नेशनल बैंक, बसंत लोक, नई दिल्ली
खाता नम्बर - 04072010038910
IFSC CODE : PUNB0040710

नोट : शुल्क **"भारतीय गोवंश रक्षण संवर्द्धन परिषद"** के नाम पर जमा करें। सम्पर्क सूत्र : 011–26174732

पूजा पाराशर (स्वतंत्र लेखिका)

श्री रमण महर्षि एक महान संत व समाज सुधारक थे, जिन्होंने अल्पायु में ही सत्य की अनुभूति की और ईश्वर प्राप्ति हेतु अरुणाचलेश्वर, तिरुवन्नामलाई में आकर बस गए थे। वे विश्व प्रसिद्ध महान संत थे, इसलिए उन्हें महर्षि रमण नाम से संबोधित किया जाता है। वे प्रत्येक छोटे-बड़े जीवों से बहुत प्रेम करते थे। उनका गोमाता से प्रेम और गोमाता का उनसे प्रेम बहुचर्चित है।

मानव चेतना को जागृत करने वाली 'गोमाता लक्ष्मी'

पंचभूतों का प्रतिनिधित्व करते दक्षिण भारत के 5 प्राचीन शिव मंदिरों में एक **'अरुणाचलेश्वर मंदिर'** जो अग्नि का प्रतिनिधित्व करता है, तमिलनाडु राज्य के तिरुवन्नामलाई जिले में स्थित है। यह अरुणाचल पहाड़ी पर है, जिसे ईशा पूर्व पहली शताब्दी से भी प्राचीन माना गया है। अरुणाचलेश्वर की कृपा से मुझे यात्रा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मंदिर यात्रा के दौरान श्री रमण महर्षि जो कि उनकी तपस भूमि है, वहाँ भी गये, उनके दर्शन प्राप्त हुए। उनका आश्रम जो मंदिर के ही निकट पहाड़ी के नीचे है, वहाँ पर भी जाना हुआ। वहाँ उनकी समाधि दर्शन और उनकी उपस्थिति की अनुभूति ने संपूर्ण आश्रम का भ्रमण करने पर आकर्षित कर दिया। भ्रमण करते समय बहुत ही अद्भुत और दिव्य दृश्य समक्ष आया, जब देखा कि **वहाँ गिलहरी, हिरण वल्ली, कुत्ता जैकी, कौआ और बहुत ही सुंदर गोमाता लक्ष्मी की भी समाधि है।** मेरे लिए यह कृपापूर्ण क्षण था जब गोमाता की समाधि के दर्शन प्राप्त हुए। यह एक ऐसी अनुभूति जिसे पाकर शांति, सुख और आनंद का अनुभव हो रहा था। ऐसी अनुभूति जो एक मंदिर में साधना के पश्चात् प्राप्त होती है, वह

महर्षि रमण और गोमाता लक्ष्मी

गोमाता समाधि के समक्ष बिना साधना के ही प्राप्त हो रही थी। समाधि पर स्थापित गोमाता की प्रतिमा बहुत ही दिव्य प्रतीत हो रही थी और उनकी आँखें इतनी जीवंत मानो मुझे देख रही हों, मुख पर मुस्कुराहट जो मुझे प्रतिक्षण आत्मसुख का अनुभव करा रही थी। कुछ देर प्रार्थना करने के पश्चात् हम यात्रा के अगले पड़ाव की ओर बढ़ चले, परंतु मन गोमाता लक्ष्मी को जानने के लिए उत्सुक था। वापसी में पूरे मार्ग गोमाता लक्ष्मी की ही चर्चा करते आए और उनसे संबंधित कई जानकारियाँ प्राप्त कीं, जिन्हें यहाँ साझा करने के लिए मन आतुर है, क्योंकि एक मानव शरीर पाकर भी अपने कर्मों

एवं धर्म को हम भूल जाते हैं, परंतु गोमाता की महिमा सर्वदा श्रेष्ठ है।

श्री रमण महर्षि एक महान संत व समाज सुधारक हैं, जिन्होंने अल्पायु में ही सत्य की अनुभूति की और ईश्वर प्राप्ति हेतु अरुणाचलेश्वर, तिरुवन्नामलाई में आकर बस गए। वे विश्व प्रसिद्ध महान संत हैं इसलिए उन्हें **महर्षि रमण** नाम से संबोधित किया जाता है। वे प्रत्येक छोटे–बड़े जीवों से बहुत प्रेम करते थे। उनका गोमाता से प्रेम और गोमाता का उनसे प्रेम बहुचर्चित है। पुस्तकों, लेखों, पत्रों व आश्रम से प्राप्त लिखित साक्ष्यों के आधार पर यहाँ गोमाता लक्ष्मी व श्री रमण महर्षि के कुछ प्रमुख प्रसंगों को अनूदित कर उद्धृत किया गया है।

1920 के दशक में, अरुणाचलम पिल्लई नामक ग्रामीण के सपने में आया कि गाय और बच्चे को श्री रमण महर्षि के आश्रम में देना है। जब गाय ने बच्चे को जन्म दिया तो वह गाय और बच्चे को आश्रम में ले आया। आश्रम के चारों ओर बहुत घना जंगल था, जहाँ जंगली जानवर भी रहते थे इसलिए आश्रम के लोग इस बात के लिए तैयार नहीं थे, परंतु ग्रामीण ने देने का संकल्प कर लिया था। जब महर्षि ने पूछा, यह सब हमारे लिए क्यों? तब ग्रामीण ने उत्तर दिया – "मैं लंबे समय से आपको गाय भेंट करने की सोच रहा हूँ, मैं अब ऐसा करने की स्थिति में हूँ। काफी प्रयासों के बाद नाव और रेलवे से इन्हें लाया हूँ। कृपया इन्हें रखें, स्वामी जी।" महर्षि ने कहा कि आपने इन्हें यहाँ लाकर अपना कर्तव्य किया, परंतु इनकी देखभाल करने वाला यहां कोई नहीं है। कृपया इसे हमारी ओर से अपने पास रखें। ग्रामीण ने उत्तर दिया – "अगर आप मेरा गला काट देंगे तो भी मैं इन्हे नहीं लूंगा।" यह सुनकर ब्रह्मचारी रामनाथ जी ने बड़े उत्साह के साथ कहा कि स्वयं गाय की देखभाल करेंगे।

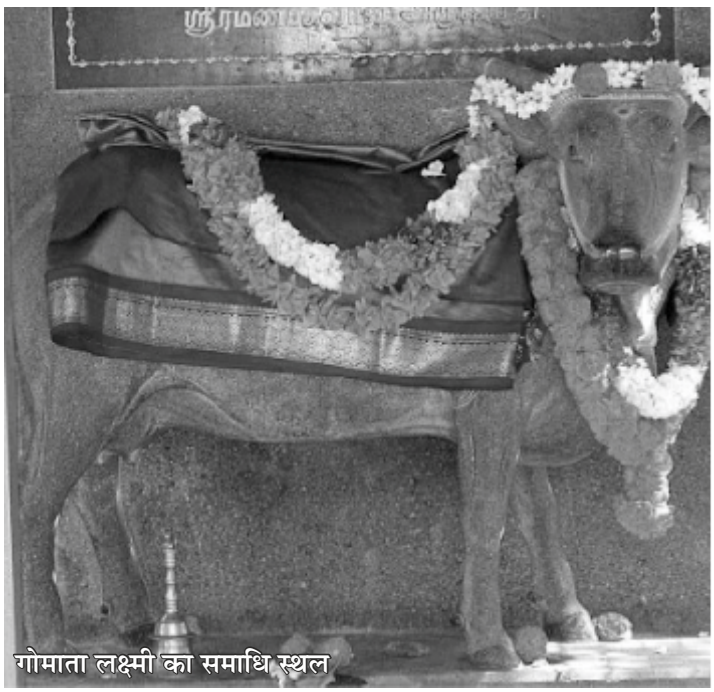
गोमाता लक्ष्मी का समाधि स्थल

बछिया का नाम लक्ष्मी रखा गया। रामनाथ जी ने किसी तरह गाय और बछिया की दो–तीन महीने तक देखभाल की। लक्ष्मी बहुत चंचल थी। इधर–उधर उछल–कूद करते हुए उसने सभी सब्जियों के पौधों को नष्ट कर दिया था, जिन्हें आश्रम में उगाया जा रहा था। अगर कोई उसे डाँटता तो वह महर्षि के पास सुरक्षा के लिए आ जाती थी। महर्षि आश्रम वासियों से कह देते थे कि इसमें उसकी क्या गलती है! वे यदि अपने पौधों की रक्षा करना चाहते हैं तो बाड़ लगा सकते हैं। रामनाथ जी आश्रम के अन्य निवासियों को सहन नहीं कर सके इसलिए गाय और बच्चे को कुछ शर्तों के साथ शहर के पशुपति नामक एक पशुपालक को सौंप दिया। कुछ समय बाद लक्ष्मी की माँ का देहांत हो गया। व्यवस्था इस तरह से रखी गई थी कि लक्ष्मी ने बछड़े को जन्म दिया तो वह आश्रम को दे दिया जाएगा और बछिया हो तो उसके पास ही रहेगी।

लगभग 1 वर्ष बाद ग्रहण के दिन लक्ष्मी अपने बच्चे के साथ स्नान के लिए आश्रम में आई। लक्ष्मी ने महर्षि को देखा। गाय और बच्चे के साथ पाली तालाब में स्नान किया और फिर वह घर चली गई। उस समय लक्ष्मी ने इस आश्रम का पूरा भ्रमण किया। मार्ग को ध्यान से याद करके वह प्रतिदिन आश्रम में आने लगी। लक्ष्मी सुबह आती और शाम को चली जाती थी। वह महर्षि के सोफे के किनारे लेट जाती थी। यदि भोजन उपलब्ध हो तो वह जिद करती थी कि महर्षि ही उसे दें। वह पहाड़ी केले के अलावा और कुछ

नहीं खाती थी। हर शाम को आश्रम छोड़ने से पहले वह हॉल का दौरा करती थी। ऐसा लगता था जैसे वह नियत समय पर रोज भोजन के लिए स्वामी जी के सामने खड़ी हो जाती है। जब आश्रमवासी घड़ी देखते तो पाते थे कि वह भोजन का समय होता था, जो एक तरह से सभी के लिए संकेत था। वह अनिच्छा से अपने घर लौटती थी। उत्सव के अवसरों पर वह अच्छे से स्नान करके, अपने माथे पर हल्दी का पेस्ट और सिंदूर पाउडर की एक छोटी सी बिंदी लगाती थी। उसके गले में एक या अधिक फूलों की माला होती थी। वह हर शाम महर्षि के पास जाकर आश्रम से शहर के लिए निकलने से पहले छुट्टी लेती है और बिदाई से पहले उपलब्ध उपहारों को ग्रहण करती थी।

सन् 1930 में वह स्थाई रूप से आश्रम से दूर आ गई थी। उसके बाद उसके तीन बछड़े थे जो समझौते के अनुसार आश्रम को दे दिए गए थे। जब वह तीसरी बार गर्भवती थी तो एक शाम वह महर्षि को छोड़ने और घर जाने के लिए तैयार नहीं थी। महर्षि वशिष्ठ जी की नंदिनी की भाँति आँसू बहा रही थी और महर्षि के पास बैठी हुई थी। (नंदनी कामधेनु की बेटी है।) महर्षि ने धीरे से उसके चेहरे पर हाथ फेरते हुए कहा– "क्या! तुम कहती हो कि तुम दूर नहीं जा सकती। तुम सिर्फ यहाँ रहना चाहती हो। मुझे क्या करना है?"

औरों की ओर देखते हुए महर्षि ने कहा – "देखो, लक्ष्मी रो रही है। कह रही है, वह दूर नहीं जा सकती। वह गर्भवती है। उसे बहुत दूर जाना होगा फिर सुबह यहाँ आना होगा। वह यहाँ आने–जाने से परहेज नहीं कर सकती। उसे क्या

करना है?" अंत में महर्षि ने किसी तरह बहला–फुसलाकर विदा कर दिया। उसी रात उसने बच्चे को जन्म दिया। उसी रात पशुपति को कुछ घरेलू कठिनाइयों ने घेर लिया। लक्ष्मी को संभालने में वह असमर्थ था। वह उसे और उसके बच्चों को लेकर महर्षि के पास आ गया। लक्ष्मी महर्षि के चरणों में लेट गई और उठी नहीं। उन्होंने अपना दाहिना हाथ उसके सर पर रखकर दबाते हुए पूछा कि क्या वह यहाँ स्थाई रूप से रहना चाहेगी? उसने अपनी आँखें बंद कर ली और ऐसे लेट गई जैसे समाधि में हो। यह देखते हुए महर्षि ने दूसरों की ओर इशारा किया कि उसे ऐसा प्रतीत हुआ जैसे कि उसके बच्चों के लिए उसकी जिम्मेदारी समाप्त हो गई क्योंकि उन्हें महर्षि की देखभाल में रखा गया है।

लक्ष्मी के आने के बाद आश्रम में डेयरी स्थापित हो गई थी। तीन– चार वर्षों से लक्ष्मी प्रतिवर्ष महर्षि जयंती के दिन एक बच्चा भेंट कर रही थी। बाद में यह प्रथा बंद हो गई। उसने कुल नौ बच्चों को जन्म दिया। महर्षि ने लक्ष्मी को केवल इसलिए विशेष स्थान नहीं दिया क्योंकि वे उसे पसंद करते थे, अपितु वे मानते थे कि वह एक अत्यधिक उन्नत भक्त थी, जिसने उनके साथ रहने के लिए गाय का रूप धारण किया था।

शांतम्माल (महर्षि की भक्त) बताती हैं – 'एक बार, जब लक्ष्मी तीसरी बार गर्भवती हुई, तो वह दोपहर के भोजन के बाद हॉल में आई। महर्षि उस समय समाचार पत्र पढ़ रहे थे। लक्ष्मी उनके पास आई और कागजों को चाटने लगी। महर्षि ने उसे देखा और कहा, "थोड़ा रुको, लक्ष्मी", लेकिन लक्ष्मी चाटती चली गई। महर्षि ने अपना समाचार पत्र एक ओर रख दिया, अपने हाथ लक्ष्मी के सींगों के पीछे रख दिए और अपना सिर उसके सामने टिका दिया। वे काफी देर तक ऐसे ही रहे। मैं पास ही खड़ी

'अरुणाचलेश्वर मंदिर'

होकर अद्भुत दृश्य देख रही थी। लगभग दस मिनट के बाद, महर्षि मेरी ओर मुड़े और कहा, "क्या आप जानती हैं कि लक्ष्मी क्या कर रही है? वह समाधि में है।" मैंने उसकी तरफ देखा कि उसके चौड़े गालों से आँसू बह रहे थे। उसकी साँसें रुक गई थीं और उसकी निगाहें महर्षि पर टिकी थीं। कुछ देर बाद महर्षि ने अपनी स्थिति बदली और धीरे से पूछा, "लक्ष्मी, अब आपको कैसा लग रहा है?"

लक्ष्मी अपने नए बछड़े के जन्म के कुछ मिनट बाद अपने शैड से हॉल में चली जाती और महर्षि के सामने मूक रूप से खड़ी हो जाती थी। श्री रमण महर्षि तब गाय को इस प्रकार संबोधित करते थे – "लक्ष्मी, आप मुझे यह बताने आई हो कि अब तुम्हारा एक नया बच्चा है। मैं शैड में आऊँ और आपके बच्चे को देखूँ।" महर्षि ने स्वयं एक बार लक्ष्मी की पवित्रता की ओर इशारा करते हुए कहा था, "उसने अपने पिछले जन्मों में क्या तप किया होगा! हो सकता है कि वह अपने अधूरे तपों को पूरा करने के लिए अभी हमारे बीच रह रही हो।" इस प्रकार उनकी कृपा की असाधारण शक्ति और लक्ष्मी की आध्यात्मिक परिपक्वता का पता चलता है।

आश्रम में लक्ष्मी की विशेष स्थिति ने उसे भक्तों द्वारा लाए गए किसी भी भोजन को करने की स्वतंत्रता थी। एक बार एक भक्त प्रसाद के रूप में काजू और मिश्री लेकर आश्रम आए, हॉल में प्रवेश करने के बाद प्रसाद को महर्षि के सामने एक स्टूल पर रखा और बैठ गए। गाय लक्ष्मी, जो महर्षि के सोफे के पास लेटी हुई थी, उठी और प्रसाद को चबाने लगी। महर्षि ने देखा और कुछ नहीं कहा। भक्त ने पहले सोचा कि गाय को परेशान करना अपवित्र हो सकता है, लेकिन जल्द ही क्रोध आ गया और चिल्लाए, "कृपया गाय को हटा दें!" महर्षि भक्त माधव स्वामी ने कहा – "क्यों? मुझे लगा कि आपने वो मिठाइयाँ लक्ष्मी को अर्पित की हैं!"

एक बार एक भक्त एक बड़े खुले बर्तन में खाने–पीने का सामान ला रहा था। लक्ष्मी उसके पीछे– पीछे आई और उस बर्तन में खाने लगी। महर्षि ने कहा, "बस लक्ष्मी, बहुत हो गया! हमारे लिए कुछ छोड़ दो।"

जनवरी 1947 की एक सुबह, लक्ष्मी गाय अपने पैरों, शरीर और पूँछ से भरी मिट्टी के साथ, नाक से खून बह रहा था और उसके गले में एक आधी कटी हुई रस्सी के साथ, जल्दी से हॉल में प्रवेश किया। वह सीधे उस सोफे पर गई जहाँ महर्षि बैठे थे। परिचारक कुछ घृणा के साथ कहने लगे कि वह अपने शरीर पर कीचड़ लेकर आई है। हालाँकि, महर्षि ने स्नेह से कहा, "उसे आने दो। क्या फर्क पड़ता है कि वह कैसे आती है?" गाय को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा, "आओ, मेरी प्रिय। कृपया निकट आओ।" इतना कहकर महर्षि ने हल्के से शरीर पर हाथ फेर दिया, उसकी गर्दन पर थपथपाया और चेहरे की ओर देखते हुए कहा, "यह क्या है? कुछ खून बह रहा है!" परिचारकों में से एक ने कहा, "हाल ही में उन्होंने उसकी नाक के माध्यम से एक रस्सी डाली थी"।

"महर्षि ने कहा – "ओह ओ! क्या यही कारण है? इसी वजह से वह यहाँ शिकायत करने आई है। क्या यह उसके लिए बहुत दर्दनाक नहीं है? दर्द सहन करने में असमर्थ, वह बिना शरीर धोए भी मुझसे शिकायत करने के लिए दौड़ी चली आ रही है। क्या करें? उसे कुछ इडली या कुछ और दें।' जब सब हॉल में लौट आए और बैठ गए, तब महर्षि ने सेवकों की ओर देखते हुए कहा, "क्या तुम सब मेरे पास अपनी परेशानी बताने नहीं आते हो? उसने भी ऐसा ही किया है। तो फिर, उस पर कीचड़ लेकर यहाँ आने के लिए तुम उससे क्यों नाराज़ हो? जब हमें परेशानी होती है, तो क्या हम इस बात पर विचार करते हैं कि हमारे कपड़े ठीक हैं या हमारे बालों को ठीक से कंघी की गयी है?"

18 जून, 1948 को लक्ष्मी महर्षि की गोद में ही महासमाधित्व को प्राप्त हो जन्म–मरण के बंधन से मुक्त हो गई। उनका समाधि स्थल, आज भी उनकी उपस्थिति की दिव्य अनुभूति करा मानव जाति को चेतना प्रदान कर रहा है। गोमाता लक्ष्मी से जुड़ी अन्य कई ऐसी ही घटनाएँ हैं जो व्यक्ति को मानव धर्म व प्रेम करने का संदेश देती आ रही हैं।

वैद्य नंदिनी भोजराज (एम.डी. आयुर्वेद)

पंचगव्य चिकित्सा के विशेष अनुभव

दूध, दही, घी, गोबर, एवम् गोमूत्र का एक विशेष अनुपात में मिश्रण कहलाता है– **पंचगव्य**। आयुर्वेद शास्त्र में इनका उपयोग नित्य दैनिक जीवन में प्रचुर मात्रा में किया गया है। साथ ही रोगों की चिकित्सा करते समय एवम् औषधियाँ बनाते समय भी किया गया है। पंचगव्य का उपयोग जब सेवन हेतु करना है तब हमें अधिक सजग रहने की आवश्यकता है। अतः जिस गोवंश से हम पंचगव्य की प्राप्ति कर रहे हैं उनका स्वस्थ रहना भी आवश्यक है।

गोवंश की रहने की जगह साफ–सुथरी, सूर्य प्रकाश से भरपूर, घूमने हेतु पर्याप्त व्यवस्था, कडबा, कटिया, हरी घास, नमक, गुड़, स्वच्छ पीने का जल आदि की उचित व्यवस्था का होना आवश्यक है। गोवंश पशुचिकित्सक की देखरेख में हो। उनका समय– समय पर लसीकरण, कृमिनिर्हरण आदि होता रहे। किस विशेष अवस्था में गोबर– गोमूत्र का उपयोग नहीं होना चाहिए, यह जानकारी भी पंचगव्य विषय में कार्य करने वालों को होना जरूरी है। जैसे लसीकरण, कृमिनिर्हरण, औषधि चिकित्सा किसी गोवंश की शुरू है उस समय अगले सात दिन तक इनके गोबर– गोमूत्र का उपयोग नहीं करना चाहिए। गाभिन गाय के गोमूत्र का उपयोग उसकी प्रसूति के छः सप्ताह बाद शुरू करें। यह सब ध्यान में रखते हुए पंचगव्य औषधि का निर्माण भारत सरकार के अन्न एवम् औषधि प्रशासन से मान्यता प्राप्त यंत्रणा में ही विधिवत् करना है।

संपूर्ण भारत में गोमूत्र से **गोमूत्र अर्क** का निर्माण अनेक स्थानों पर हो रहा है। देश के लगभग सभी, शहरों में गोमूत्र अर्क उपलब्ध है। नित्य दैनिक जीवन में सुबह से रात्रि तक अनेक अवस्थाओं में यह औषधि रूप में कार्य करता है। सुबह उठते ही कामधेनु गोमूत्र अर्क 1 चम्मच (5 मिली) 1 कप पानी में मिलाकर 1 मिनट मुंह में रख कर सेवन कर सकते हैं। इससे मसूड़ों में रहने वाली बीमारी के कारण मसूड़ों में दर्द हो, सूजन हो, दांत हिलते हों, मसूड़ो से खून आ रहा हो तब गोमूत्र अर्क के कुल्ले भी करने से लोग लाभान्वित हुए हैं। गले में खराश हो तब भी इससे लाभ होता है।

गोमूत्र में जहर के प्रभाव को खत्म करने की क्षमता आयुर्वेद में बतायी गई है। कोई जहरीला कीट हमें काटता है तब उस स्थान में सूजन होना, अंगार होना आदि दिखाई देता है। उस अवस्था में गोमूत्र अर्क में कपास या पट्टी डुबोकर उस स्थान पर कुछ समय (लगभग आधा घंटा) लगाकर रखें। धीरे–धीरे अंगार खत्म होगी, साथ ही सूजन में भी कमी आने लगेगी। विषघ्न एवम् शोथघ्न (सूजन खत्म करने की क्षमता रखने वाला) यह गोमूत्र के गुण शास्त्रों में वर्णित हैं।

इन्हीं गुणों के कारण गोमूत्र अर्क का जब हम सेवन करते हैं तब हमारे शरीर में कहीं भी कोई समस्या हो वह भी अपने आप ठीक होने लगती है। कुछ लोग कामधेनु गोमूत्र अर्क का सेवन शुरू करने के दस से पंद्रह दिनों के बाद ही उत्साह बढ़ा होने की गवाही देते हैं। कभी–कभी शरीर के किसी अंग में वेदना होती है। कभी चोट लगने से भी वेदना होती है। इन दोनों स्थितिओं में कामधेनु गोमूत्र अर्क से पट्टी गीली कर उस स्थान पर लगाएं एवम् धीरे–धीरे अर्क त्वचा में प्रवेशित हो रहा है, यह देखें। ऐसा दिन में कम– से–कम दो बार करें। बालों में रूसी का होना, यह एक आम बात होती है। नहाने के पहले दस से पंद्रह मिनट पूर्व गोमूत्र बालों में लगाकर रखें, तदुपरान्त बाल धो लेवें। बालों में सिरकी त्वचा में लघुत्व एवम् मुलायमता ध्यान में आएगी। ऐसा हफ्ते में दो से तीन बार शुरूवात में करें। तदुपरान्त हफ्ते में एक बार पूरा ठीक होने तक करते रहें। कभी–कभी किसी कारणवश शरीर के कोई अंग पर जख्म होता है कामधेनु गोमूत्र अर्क में Antimicrobial, Antifungal, Antibacterial गुणधर्म होने के कारण उसे वहाँ तुरंत लगाने से जख्म ठीक हो जाता है। अतः पूर्ण ठीक होने तक इससे नित्य साफ करने हेतु उपयोग करें। तत्पश्चात जात्यादि घृत से पट्टी बाँधें। पाँव की दरारें, बेड़ सोअर, पानी में अधिक समय तक पाँव गीले रहने से उंगलियों के बीच होने वाले जख्म, खरोंच आने से लगना, भगंदर में भी जात्यादि घृत की पट्टी दिन में एक बार खोलकर बांधें। जख्म सूखने लगे तब थोड़ा समय खुला भी छोड़ें, तदुपरान्त जात्यादि घृत लगाएं।

भारत विविधताओं से परिपूर्ण देश है–खानपान, रहन–सहन, पेहरावा वातवरण आदि। इसका परिणाम भी हमें दिखाई देता है। कुछ लोगों को एक ऋतु समाप्त होकर दूसरी ऋतु में प्रवेश के समय सर्दी –जुकाम आदि होता है। इस अवस्था में पंचगव्य घृत 1 चम्मच सुबह भोजन के साथ तीन माह तक सेवन नियमित करें। शरीर की व्याधिप्रतिकार क्षमता बढ़कर हम लाभान्वित होते हैं। साथ ही हमारे यकृत की पाचन प्रणाली में भी सुधार होता है। सोरिएसिस, एक्जिमा जैसे त्वचा विकारों में भी पेट में लेने से लाभ तो होता ही है साथ में त्वचा जहाँ खराब हुई है वहाँ लगाने से भी लाभ होता है। परहेज के साथ एवम् आयुर्वेद वैद्य के मार्गदर्शन में चिकित्सा कराएँ।

''शतधौत घृत'' गाय के घी को जब विशिष्ट पद्धति के द्वारा सौ बार धोया जाता है तब वह शतधौत घृत कहलाता है। दिन में एक से दो बार इसे लगाकर उस स्थान की त्वचा को धीरे– धीरे मसलें। यह त्वचा को मुलायम रखता है। त्वचा के वर्ण को निखारता है। जहाँ भी मस्से आ रहे हैं उस स्थान पर भी नियमित दो समय लगाएं। कभी–कभी जो त्वचा का भाग अधिक समय सूर्य प्रकाश में रहता है वहाँ त्वचा मोटी भी हो जाती है साथ ही अत्यधिक काली भी। उस स्थान पर नित्य सुबह–शाम शतधौत घृत को आराम से मसलें, नियमित लगाने से 10–15 दिनों में ही बदलाव ध्यान में आएगा। ''शतधौत घृत'' लगाने से तो लाभ होता ही है, साथ में अगर चिकित्सक के मार्गदर्शन में कुछ आवश्यक दवाई हम सेवन भी करें तब यह लाभ अधिक समय तक रहता है। त्वचा को अंदर से अच्छा पोषण मिलने से स्थायी लाभ प्राप्त होता है। कभी–कभी साथ में पाचन सुधार के लिए भी औषधि देने की आवश्यकता पड़ सकती है। कामधेनु हरडेचूर्ण शाम के भोजन के आधे घंटा पूर्व कुनकुने पानी के साथ सेवन करने से अधिक लाभ प्राप्त होगा, अतः चिकित्सक के मार्गदर्शन में चिकित्सा करायें।

एसीडिटी, अम्लपित्त, यह आजकल घर–घर की कहानी बनी है। उसके लिए तुरंत कुछ गोली खाने से उस समय के लिए तो लाभ दिख सकता है लेकिन यह तकलीफ बार–बार क्यों हो रही है उसकी तरफ अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है। रात्रि में अधिक समय तक जागना, खट्टी चीजों का आहार में अधिक उपयोग, टेन्शन, भोजन में अनियमित्तता, फास्ट फूड का अधिक सेवन, अधिक जल्दबाजी में भोजन करना आदि अनेक कारण हो सकते हैं। अतः सर्वप्रथम कारणों को दूर करना आवश्यक है। तदुपरान्त दवाई का सेवन करें। लघुसूतशेखर, पंचतिक्त

घृत, गाय के घी का नस्य, एरंड तैल का सेवन आदि का चिकित्सक द्वारा रुग्ण का परीक्षण करने से लाभ अधिक सयम तक हो सकता है। जब ज्यादा तकलीफ हो रही है तब लघुसूतशेखर रस (देवलापार का बना) की 4–4 गोलियां पीसकर गाय के घी–शर्करा या गाय के दूध के साथ सेवन करने से तुरंत कुछ–न–कुछ तो लाभ होता ही है। अपनी–अपनी बिगड़ी अवस्था के अनुरूप लाभ कम–अधिक दिख सकता है। पंचतिक्त घृत का एक या दो चम्मच का नित्य भोजन में सेवन भी लाभदायक सिद्ध होता है। अम्लपित्त के साथ ही शरीर के अन्य दर्द भी इसके सेवन से कम हो सकते हैं। लगभग तीन माह तक चिकित्सक के मार्गदर्शन में इसे सेवन करें।

नाक में दो बूंद गाय का घी कुनकुना करके डालना अनेक जटिल समस्याओं में लाभ देता है। हफ्ते में पाँच दिन गोघृत का दो बूंद का नस्य चिकित्सक के परामर्श से करें। किस अवस्था में ''नस्य'' को करने से धोका हो सकता है, इसकी जानकारी आम आदमी को नहीं होती है, अतः चिकित्सक का मार्गदर्शन अवश्य लेवें। आयुर्वेद पंचगव्य औषधि एवम् योग्य आहार– विहार का पालन मायग्रेन/अर्धशीशी को भी जड़ से खत्म कर सकता है।

ऋतु बदलाव के समय सर्दी–जुकाम–खाँसी अनेक लोगों में दिखती है। कभी–कभी बुखार भी आता है। बुखार चढ़ने के पूर्व हमें शरीर में हल्कापन/वेदना आदि लक्षण ध्यान में आते हैं। बुखार के दौरान भी मुहँ में कड़वापन आता है। उस समय कामधेनु हरडे चूर्ण 1 चम्मच सेवन करने वाले अन्न के साथ लेने से लगभग तीन बार चूर्ण सेवन करने के पश्चात धीरे–धीरे कड़वापन कम होता ध्यान में आता है। लगभग पांच दिन कामधेनु हरड़ेचूर्ण का सेवन सुबह–शाम कुनकुने पानी के साथ अन्न ग्रहण के पूर्व या अन्न के साथ चिकित्सक के मार्गदर्शन में लेने से लाभ निश्चित होगा।

अनेक लोग सुबह उठने के पश्चात पानी ठंडा/ गरम पीते हैं। कुछ लोग तो एक से तीन लीटर के बीच जल सेवन करते हैं। कुछ व्यक्ति सुबह चाय लेने के पश्चात ही मलत्याग कर पाते हैं। यह अवस्था धीरे–धीरे बढ़ने लगती है। फिर वह व्यक्ति कोई चूर्ण का उपयोग पेट साफ करने हेतु करने लगता है, परंतु यह एक धक्का देना है। सुबह उठने के पश्चात् अपने आप पेट साफ होना आवश्यक है। उसके लिए पाचन एवम् सार–मल विभजन व्यवस्थित होना आवश्यक है। अन्न के पाचन के उपरान्त अन्न का सारभाग खून में आता है। खून के माध्यम से वह संपूर्ण शरीर में पहुँचता है। साथ ही संपूर्ण शरीर में तैयार मल खून के ही माध्यम से एकत्रित होकर मल–मूत्र रूप में शरीर से बाहर निकलता है। मल योग्य पद्धति से बाहर आने के लिए मलत्याग हेतु भारतीय पद्धति से बैठना भी बहुत महत्वपूर्ण होता है। दैनिक जीवन क्रम में उचित मात्रा में जलपान करना भी उतना ही आवश्यक है।

पेट का साफ न होना भविष्य में किसी बीमारी को निमंत्रण देने जैसा ही होता है। रुग्ण का इतिहास लेते समय अनेक रुग्णों में पेट लंबे समय से ठीक से साफ न होने का इतिहास दिखाई देता है। उस समय चाय/पानी/चूर्ण आदि द्वारा धक्का न देवें, बल्कि चिकित्सक के मार्गदर्शन में योग्य चिकित्सा कराए। कामधेनु हल्दी घनवटी, गोमूत्र आसव, कामधेनु हरड़े चूर्ण, हिंग्वाद्यघृत, पंचतिक्त घृत, या नारायण तैल आदि दवाइयों में से योग्य मात्रा में, उचित अनुपान के साथ चिकित्सक के मार्गदर्शन में सेवन करेंगें तब अंदर से ही शरीर लाभान्वित होगा। उसके प्रभाव से कल की आने वाली बड़ी बीमारी को भी हम रोक सकेंगें।

कामधेनु गोमय भस्म दंतमंजन, यह हमारे दैनिक जीवन में नित्य उपयोग की वस्तुयें हैं। हमारे बचपन में तो घर–घर में राख से मंजन बनता ही था। गाय घर–घर में थी। अतः गोबर से कंडे भी तैयार होते थे– जलते भी थे, राख भी तैयार होती थी। यह मिश्रण मसूढ़ों की तकलीफ एवम् दांत का ढीला होना आदि में बहुत ही लाभदायक है।

कामधेनु गोमूत्र अर्क, कामधेनु हल्दी घनवटी, पंचगव्य घृत आदि पंचगव्य औषधि का पंचगव्य चिकित्सक के मार्गदर्शन में सेवन नस्य–बस्ति आदि पंचकर्म करने से कर्कविकार के रुग्णों को भी लाभ हेाता दिखाई दे रहा है।

पंचगव्य की औषधि शरीर के अंदर जाने के बाद शरीर की शुद्धि होती है। शरीर में जब कोई व्याधि तैयार होती है उसके कुछ साल पहले से ही अंदर अशुद्धियाँ अपनी जगह बनाकर शरीर में डेरा बना लेती हैं। परिणामस्वरूप अलग–अलग शरीर में अलग– अलग बीमारी अपना घर बना लेती है। गोमूत्र एवम् गोबर में शरीर शुद्धि की विलक्षण क्षमता है। अतः बीमारी को अंदर से ठीक करने का काम

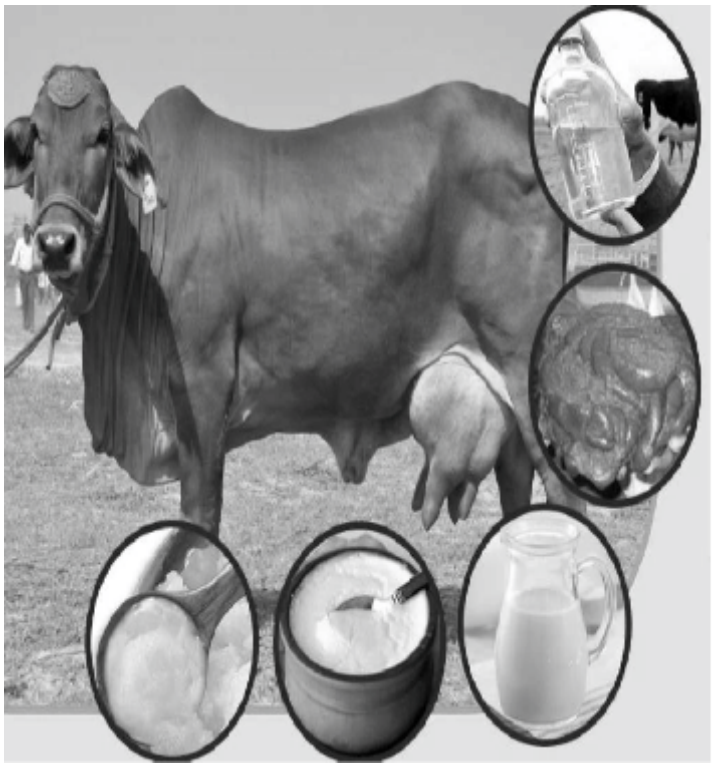

पंचगव्य से हो सकता है, लेकिन इसे कितना समय लगेगा आदि समझने हेतु चिकित्सक का मार्गदर्शन लाभदायक होता है।

प्रदूषित वायु का लंबे समय तक शरीर में प्रवेश फुफ्फुस जन्य बीमारी को न्योता देता है। गोमूत्र आसव, पंचगव्यघृत का नस्य, बिभीतकावलेह का उचित मात्रा में कुछ लंबे समयतक सेवन लाभदायक होता है।

वर्तमान समय में महिलाओं/लड़कियों में माहवारी से संबंधित बीमारी भी बड़ी मात्रा में सामने आ रही है। व्यायाम का अभाव, यह उसका एक कारण तो है ही, साथ ही वर्तमान दिनचर्या एवम् खान–पान (फास्ट फूड आदि) भी महत्वपूर्ण कारण हैं, जिन्हें ठीक करना भी अति आवश्यक है। माँ–पिताजी के शरीर में जो बीमारी पहले से ही है वह तो आने वाले बच्चे के शरीर को विरासत में ही मिलती है। अतः भारत के भावी पीढ़ी का आरोग्य कुछ हद तक तो पालकों के हाथ में उनके जन्म लेने के पहले से ही है। जिस तरह से कृषक पौधे के सबसे सशक्त फल का ही बीज रखता है पुनः पौधा तयार करने के लिए उसी तरह से मनुष्य के शरीर में ही उसके ''बीज'' की निर्मिति होती है, यह भी ध्यान में रखना आवश्यक है।

व्याधि कोई भी हो एकबार शरीर में अपना घर बना ले तब वह ठीक होगी या नहीं उसके लिए अनेक घटक काम करते हैं। अतः व्याधि न हो उसके लिए जो भारतीय जीवन पद्धति बताई गई है – जैसे दिनचर्या (सुबह से रात्रि तक किस क्रम से हमें क्या करना है) ऋतुचर्या (किस ऋतु में हमें क्या खाना/नहीं खाना –क्या करना/नहीं करना उचित हो) का पालन बहुत ही महत्वपूर्ण है। हमारे आहार में भी सबको दूध, दही, मक्खन, छाछ एवम् घी का सेवन एक जैसा लाभदायक नहीं होता। उदाहरण के लिए –

1. दूध हल्का कुन–कुना या गरम सेवन करें।
2. दही का सेवन रात्रि में निषेध बताया गया है।
3. मक्खन ताजा ही सेवन करें। बासा मक्खन का सेवन रक्त दोष/खराबी करता है, ऐसा शास्त्र वचन है।
4. छाछ का सेवन ग्रीष्म ऋतु–धूपकाल में मना/निषेध किया गया है।
5. घी का सेवन वसंत ऋतु में नहीं करें, ऐसा शास्त्र वचन है।

पंचगव्यों की अपनी–अपनी प्रकृति/गुणधर्म एवम् ऋतुओं का अपने स्वभाव के शरीर प्रभाव का अभ्यास कर ऋषि–मुनियों ने मनुष्य स्वास्थ्य हेतु यह मार्गदर्शन आयुर्वेद शास्त्रग्रंथों में किया है। उसका पालन स्वास्थ्य रक्षक है, अतः अनुभवी चिकित्सकों द्वारा अपनी–अपनी प्रकृति के लिए मार्गदर्शन प्राप्त करें।

सभी लोग कामधेनु पंचगव्य आयुर्वेद चिकित्सा केन्द्र के महल एवम् लेन्ड्रा पार्क (गार्डन), न्यू रामदासपेठ, नागपुर स्थित दवाखाने में संपर्क कर वैद्यों द्वारा मार्गदर्शन प्राप्त कर सकते हैं।

'यह लेख गोविज्ञान अनुसंधान केन्द्र, देवलापार, नागपुर द्वारा संचालित कामधेनु पंचगव्य आयुर्वेद चिकित्सा केन्द्र के आयुर्वेद शास्त्र एवम् रूग्णानुभव पर आधारित है।

हरिशंकर दीक्षित 'पथिक'

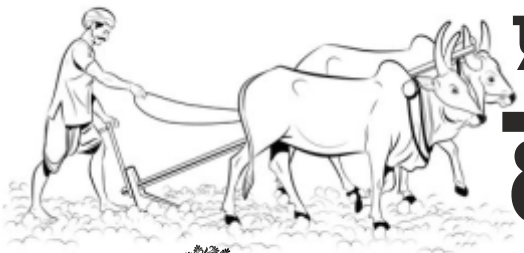

प्रकृति का सहायक-सहचर
हमारा गोवंश

हमारे आर्षग्रन्थों के अनुसार, ईश्वर ने हमारी धरती पर गोवंश की रचना सृष्टि को गतिशील बनाये रखने वाली ईश्वरीय माया प्रकृति के सहायक के रूप में करने के पश्चात्, गोवंश की सेवा–रक्षा करते हुए, इसकी शक्ति–सम्पदा का सदुपयोग कृषि तथा कृषि आधारित उद्योग–धन्धों में करते हुए, गोघृतादि द्रव्यों से हवन–यज्ञ करके प्रकृति की शक्ति पर्यावरण को निरन्तर शुद्ध बनाये रखने के लिए समस्त प्राणियों में विलक्षण, विशिष्ट तथा सर्वश्रेष्ठ प्राणी मनुष्य की रचना की है। मनुष्य रचना के पश्चात ही सृष्टि रचना कार्य पूर्ण हुआ है। उपरोक्त कथ्य से स्पष्ट है कि मनुष्य की रचना ईश्वर ने अपने सृष्टि–कौतुक में विशेष उद्देश्य की पूर्ति के लिये की है। इसके लिये उसने मनुष्य को समस्त प्राणियों से उत्तम सुविधायुक्त शरीर तथा विलक्षण उन्नतशील कुशाग्र बुद्धि और विवेक सम्पन्न रचा है। हमारे पूर्वजों ने अपनी बुद्धि–विवेक द्वारा सृष्टि में मनुष्य की रचना के ईश्वरीय हेतु को जानकर ही मानव धर्म (कर्तव्यों) की अवधारणा करते हुए **''मानव धर्म शास्त्र''** जैसे अद्भुत ग्रन्थ की रचना कर संसार को ईश्वरीय इच्छा से अवगत कराया। इसी ज्ञान को उपदेश रूप में देने के कारण ही संसार ने हमारे देश को विश्व गुरू की उपाधि से विभूषित किया था।

लाखों वर्ष तक हमारा देश मानवधर्म का पालन करता हुआ अपने चरम उत्कर्ष पर प्रतिष्ठित रहा। सम्पूर्ण विश्व को कुटुम्ब मानने वाले हमारे देश में मानवधर्म के आधार पर लोग अपना जीवनयापन करते हुए भावी पीढ़ी को भी ऐसा करते रहने की प्रेरणा देते रहे। हमारे जीवनयापन का आधार हमारा गोवंश आदिकाल से रहा है और गोघृत तथा गोमय के उपलों सहित अनेकानेक सुगन्धित द्रव्यों की समिधा हवन–यज्ञों में प्रयुक्त होकर पर्यावरण शुद्धि का आधार रहा है। इस प्रकार हमारा देश ईश्वरीय

माया प्रकृति तथा उसकी सहचरी गो और धरती का माता के समान आदर–सम्मान करता हुआ इनका वाँछित दोहन त्याग भाव से करता हुआ अपना जीवनयापन मितव्यता के आधार पर करता रहा है।

आदिकाल से कुछ दशक पूर्व तक हमारे देश का महत्वपूर्ण धन गोवंश माना जाता था। किसी भी परिवार की समृद्धि उसके गोधन के आधार पर आँकी जाती थी। गोधन की रक्षा लोग अपने प्राणों की बाजी लगाकर भी करते थे। सामान्य जन ही नहीं चक्रवर्ती सम्राट तक के अनेक उदाहरण पुराणों से आधुनिक इतिहास तक में वर्णित हैं। सम्राट दिलीप और सत्यवादी जाबाल से बालक शिवाजी और अन्यान्य गोभक्तों ने प्राणों की चिन्ता किये बिना गोवंश की रक्षा की है।

14 अगस्त 1947 का दिन हमारे देश का ऐसा दुर्भाग्यपूर्ण दिन था जिस दिन हमारे देश को मजहबी आधार पर तीन भागों और दो देशों में बाँटकर खण्डित किया गया। हमारे तत्कालीन शासक अंग्रेजों ने जाते–जाते देश को ऐसा घातक दंश दिया जिसकी पीड़ा आज तक देश भोग रहा है और न जाने कब तक भोगेगा। पन्द्रह अगस्त को हमारे देश की सत्ता जिन हाथों में आयी उन हाथों ने ही देश की जनता को प्रकृति माता से विलग करने का महापाप किया। इन हाथों ने ट्रैक्टर जैसे गोवंश के शत्रु को देश में लाकर गोवंश पर अप्रत्यक्ष आघात करने के पश्चात् गो सदृश (अधिक किन्तु दूषित दुग्धदायी) काऊ जैसे विदेशी पशु का आयात कर हमारी गोमाता को उपेक्षित ही नहीं किया अपितु संकरण द्वारा इसकी पवित्रता भी नष्ट की। इस प्रकार हमारे गोवंश

पर इन हाथों द्वारा दोहरी मार पड़ी जिसके कारण हमारा मातृ–पितृवत गोवंश हमारे द्वारा ही उपेक्षित–तिरस्कृत होकर नाना कष्ट सहता हुआ देश भर में मारा–मारा फिरता विलुप्ति की कगार तक पहुँच रहा है। यदि सत्तासीन प्रमुख विद्वान व्यक्ति विवेकशील और दूरदर्शी होते तो परम्परागत कृषि यन्त्रों को उन्नत कर बैल चालित ट्रैक्टरों और विद्युत उत्पादन हेतु बैलचालित जेनरेटरों का निर्माण, उपलब्ध तकनीकि के आधार पर करवाकर विकास की अन्धी दौड़ में दौड़ने से बच सकते थे। यदि हमारे कर्णधार विकास की दौड़ में विवेक और दूरदृष्टि के आधार पर दौड़ते तो हम अपनी गोशक्ति–सम्पदा को उपेक्षित कर नष्ट करने के स्थान पर इसका सुनियोजित ढंग से उपयोग कर अरबों–खरबों रुपया विदेशी बाजारों को न देते। साथ–ही–साथ अरबों–खरबों अश्व शक्ति से अधिक हमारी गोशक्ति कृषि और कुटीर उद्योगों में प्रयुक्त होने से प्रकृति की शक्ति पर्यावरण भी शुद्ध रहता।

हमारे अदूरदर्शी अविवेकी कर्णधारों ने मजहबी–उन्मादी –जेहादियों से भयभीत होकर देश का विभाजन स्वीकार कर जो घात देश के साथ किया उससे भी बड़ा घात स्वयं को सदायश सिद्ध करने के लिए सम्पूर्ण आबादी की अदला–बदली न करके किया। आज कितने लोग जानते हैं कि लगभग एक चौथाई मुस्लिम आबादी को एक तिहाई भूमिकर देकर भी आबादी की अदला–बदली न करने से हमारे देश पर कितना अतिरिक्त जनभार पड़ा और इस जनभार के कारण हमारे गोवंश की कितनी क्षति हुई। मोटे तौर पर आबादी की अदला–बदली न करने से लगभग दो करोड़ हिन्दू पाकिस्तान से भारत नहीं आये और भारत से लगभग सात करोड़ मुसलमान पाकिस्तान नहीं गये। इसके अतिरिक्त लाखों हिन्दू पाकिस्तान से भगाए और (लाक्षाधिक मारे गये) इस प्रकार हमारे देश पर सात–दो = पाँच करोड़ का अनावश्यक जनभार बंटवारे में अनुपात से अधिक भूमि देने के बाद भी बना रहा। ऐसे अविवेकी

अदूरदर्शी थे हमारे तत्कालीन कर्णधार। आज यह जन भार पच्चीस करोड़ तक पहुँच चुका है। आजादी के बाद ट्रैक्टर रूपी दानव और मशीनी कोल्हुओं के हस्तक्षेप से उपेक्षित गोवंश की हत्या कर उसके मांस के भक्षण और निर्यात में इसी मजहबी आबादी का भारी हाथ रहा है। सम्भवतः यही सोचकर हमारे तात्कालिक प्रमुख कर्णधार ने आबादी की अदला–बदली नहीं की होगी कि ट्रैक्टरों के आने के बाद अनुपयोगी गोवंश को यही आबादी तो ठिकाने लगायेगी। 1966 की गोपाष्टमी के दिन गो रक्षा हेतु आन्दोलन कर रहे गोभक्तों पर संसद भवन के सामने भीषण लाठी– गोली चलवाने वाली घटना से तो यही स्पष्ट होता है।

हमारे देश के हिन्दुओं और इन हिन्दुओं में भी विशेषकर स्वयं को हलधर बलराम तथा गोपाल कृष्ण का वंशज मानने वाले लोगों तथा समाज के मार्गदर्शक सन्त–महात्माओं में कितने प्रतिशत ऐसे लोग हैं जिन्हें 1966 की गोपाष्टमी के दिन गोवंश की रक्षा–सुरक्षा हेतु आन्दोलनकारी सन्त–महन्तों सहित गोभक्त जनता पर संसद भवन के सामने प्रदर्शन करने के कारण तत्कालीन इन्दिरा सरकार ने अन्धाधुन्ध गोलियाँ चलाकर ''जलियाँवालाबाग'' जैसा दुष्कर्म किया था। विडम्बना यह है कि शासक पार्टी का चुनाव चिन्ह **''दो बैलों की जोड़ी''** था। यह वीभत्स गोलीकाण्ड पुरी के शंकराचार्य निरंजनदेव तीर्थ, जैनमुनि सुशील कुमार, सन्त प्रभुदत्त ब्रह्मचारी और स्वामी करपात्री जी जैसे सन्तों के मार्गदर्शन में शान्तिपूर्ण रूप से हो रहे आन्दोलन में निहत्थे गोभक्तों पर तत्कालीन प्रधानमंत्री इन्दिरा गाँधी के निर्देश पर हुआ था। लक्षाधिक गो भक्त आन्दोलनकारियों पर लाठी–गोली चलने से शताधिक गो भक्तों का बलिदान हुआ था और सैकड़ों आहत हुए थे। गो भक्तों के खून से संसद मार्ग ऐसा दिखने लगा था जैसे वहाँ पर खून से होली खेली गयी हो। इस बर्बरता से क्रोधित–आवेशित हो गोभक्तों ने आकाशवाणी भवन सहित कनाट प्लेस के कई भवनों में तोड़फोड़ की थी। सैकड़ों गोभक्तों को सरकार ने बन्दी भी बनाया था। स्वतन्त्र भारत का यह अविस्मरणीय गोरक्षा आन्दोलन था जो मात्र छः दशकों में ही विस्मृत हो गया प्रतीत होता है। इस आन्दोलन में भाग लेने वाले गोभक्त लगभग देश के प्रत्येक प्रान्त से आये थे। उनमें से आज विरले ही जीवित होंगे। पंजाब के नामधारी सिखों और नागा सन्तों की सहभागिता इसमें बढ़–चढ़कर थी।

यदि वर्तमान सरकार पूरी निष्ठा से चाहती है कि हमारे सर्वदेवमय गोवंश का आदर–सम्मान पूर्व की भाँति हो तो उसे गोशक्ति और सम्पदा का सदुपयोग सुनिश्चित करना ही होगा। ऐसा करने से ही हमारा गोवंश हमारे परिवार में फिर से मातृ–पितृवत सम्मान प्राप्त कर सुखी हो सकेगा। अन्य उपाय पत्तों में जल छिड़काव के समान ही निष्फल सिद्ध होते रहेंगे। वर्तमान तकनीकी युग में यह कार्य कठिन नहीं है। उन्नत परम्परागत कृषि उपकरण और कोल्हुओं का निर्माण और प्रचलन ही एकमात्र यथेष्ट फलदायी उपाय है। इनका चलन प्रारम्भ होते ही शुभ परिणाम प्राप्त होने लगेंगे, इसमें किसी को सन्देह नहीं करना चाहिये। बैल–चालित ट्रैक्टर जैसा पाँच–सात फाल का हल लघु और सीमान्त कृषकों के लिये ही नहीं गोवंश के लिये भी वरदान सिद्ध हो सकता है। आवश्यकता है दृढ़ निश्चय युक्त पावन प्रयास भर की। वर्तमान सरकार चाहे तो बाजार के दबाव की उपेक्षा कर कृषकों को उचित सहायता देकर इस लोकमंगलकारी कार्य को प्रारम्भ कर धरती, गो और प्रकृति माता का आशीर्वाद लेकर दीर्घायु भी हो सकती है। यह कार्य धरती की शिव–सुन्दर सृष्टि के लिये मंगलमय भी सिद्ध होगा।

प्रो. अनु पाण्डे

गोमाता केवल शब्दों में आत्मा में नहीं

एक सच्चे सनातनी होने के नाते मैं अपनी कॉलोनी के आस पास गायों और कुत्तों को रोज भोजन खिलाती हूँ। मेरे लिए गाय हमारी माता है जिसमें 33 कोटि देवी–देवता निवास करते हैं और कुत्ते भैरव बाबा के प्रिय वाहन। मैं एक गाय को रोज भोजन खिलाती थी जो बहुत कमज़ोर और कुपोषित थी जिसे मैंने पहली बार लगभग एक साल पहले देखा था। वह बहुत मिलनसार और बहुत ज्यादा खाने वाली थी। चाहे आप उसे कितना भी खिलाएँ, वह हमेशा भूखी रहती थी। जैसे ही वह मुझे आते देखती, वह मेरी ओर दौड़ती और जो कुछ भी मैं उसे देती उसे जल्दी से खत्म कर देती।

अचानक हमारे खूबसूरत रिश्ते पर ग्रहण लग गया। 23 अप्रैल 2025 की रात जब मैं गायों को भोजन डालने गई तो वो मुझे नहीं मिली। वो हमेशा ईस्ट विनोद नगर, पूर्वी दिल्ली में एक सरकारी स्कूल के सामने बैठी रहती थी। और कभी–कभी कूड़ेदान के पास जो स्कूल से सिर्फ़ 100 मीटर की दूरी पर है। मैंने उसे कई बार ढूँढ़ा लेकिन वो नहीं मिली। मैंने मन ही मन सोचा कि शायद मालिक उसे ले गया है। अगले दिन जब मैं गायों को भोजन डालने गई तो मैंने फिर से उसे ढूँढ़ा लेकिन वो नहीं मिली। उसकी अनुपस्थिति ने मुझे बहुत दुखी कर दिया क्योंकि मैं सोच रही थी कि क्या उसे भोजन ठीक से मिल रहा होगा या भगवान न करे वो किसी दुर्घटना का शिकार हो गई हो या तस्करों ने उसे उठा लिया हो।

मेरे मन में तरह–तरह के बुरे विचार आने लगे। मैंने सब्जी और फल बेचने वालों और इलाके में नियमित गोग्रास खिलने वाले गोसेवकों से उसके बारे में पूछताछ शुरू की, लेकिन किसी को कुछ पता नहीं था। फिर मैंने उसके मालिक को खोजने की कोशिश की। कई लोगों से संपर्क करने के बाद मैं मालिक का पता लगाने में कामयाब हो गई । वह भी उसे ढूँढ़ रहा था और काफी चिंतित लग रहा था। मैंने उससे गाय के गुम होने की शिकायत पुलिस में दर्ज कराने को

कहा, लेकिन वह ऐसा करने में झिझक रहा था। उसने मुझसे कहा कि अगर वह पुलिस स्टेशन जाएगा तो पुलिस उसे गाय को सड़क पर छोड़ने के लिए डाँटेगी और उसके खिलाफ़ कार्रवाई करेगी। उसने मुझे यह भी बताया कि उसने यह गाय एक साल पहले एक विक्रेता से खरीदी थी। तब वह काफी कुपोषित थी, लेकिन अब वह काफी स्वस्थ है और गर्भवती भी है। उसका गायब होना उसके और उसके परिवार के लिए आर्थिक और भावनात्मक दोनों तरह का झटका था। और यह सिर्फ एक गाय नहीं थी, बल्कि एक गर्भवती गाय थी जिसके गर्भ में एक जीवन पल रहा था।

मुझे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि कुछ दिनों बाद (27/28 अप्रैल 2025) मधु विहार, पूर्वी दिल्ली से उक्त मालिक की एक और गाय गायब हो गई वह भी गर्भवती थी। मालिक बहुत दुखी हुआ। मैंने उसे दोनों गायों की गुमशुदगी की शिकायत थाने में दर्ज करवाने को कहा और बहुत अनुनय –विनय के बाद वह इस शर्त पर राजी हुआ कि मैं उसके साथ थाने चलूँ। अगले दिन उसने अपनी पत्नी को भेजा और कहा कि वह शिकायत दर्ज करवाने के लिए मेरे साथ चलेगी। इसलिए हम गुमशुदगी की शिकायत दर्ज करवाने कल्याणपुरी थाने गए।

हमारी गोमाता को भोजन, पानी और सुरक्षा की आवश्यकता है, लेकिन उन्हें ये बुनियादी ज़रूरतें प्रदान करने के बजाय हम केवल दोषारोपण का खेल खेलते हैं। गाय के मालिकों को उनकी वर्तमान दुर्दशा के लिए दोषी ठहराते हैं। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि आज जो मॉल, पार्क, फुटपाथ और मेट्रो स्टेशन बने हैं, वे कभी गोचर भूमि थे जहाँ गायें बिना किसी बाधा के बैठती और घूमती थीं। समय के साथ गोचर भूमि कंक्रीट के जंगलों में बदल गई और अब गायें सड़कों पर घूमने और बैठने के लिए मजबूर हैं।

मुझे आश्चर्य हुआ कि पुलिस ने कुछ नहीं किया। केवल मालिक की पत्नी को गायों को सड़क पर घूमने देने के लिए डांटा और गाय की दुर्दशा के लिए उसे ही दोषी ठहराया। कई बार अनुरोध करने के बाद उन्होंने केवल गायब गायों के बारे में कुछ विवरण लिखे। उन्होंने न तो कोई औपचारिक शिकायत दर्ज की और न ही गायों की तस्वीरें लीं। मैंने उन्हें बताया कि जिस जगह गायें बैठती थीं, वहाँ सीसीटीवी कैमरा लगा हुआ था, लेकिन मुझे संदेह है कि उस सीसीटीवी की कभी जाँच की गई होगी।

भारत गोमांस के सबसे बड़े निर्यातकों में से एक था और अभी भी हम सभी जानते हैं कि गायों को अवैध रूप से उठाया जाता है और बूचड़खानों में पहुँचाया जाता है। गौ रक्षक हैं जो अपनी जान जोखिम में डालकर तस्करी की गई गायों से भरे ट्रकों को जब्त करवाते हैं। बावजूद इसके लाख टके का

सवाल यह है कि पुलिस केवल तभी कार्रवाई क्यों करती है जब गायों से भरे ट्रक पकड़े जाते हैं? गायों के चोरी होने पर क्यों नहीं? क्या पुलिस तस्करी के स्रोत गाय चोरों को न पकड़कर गायों की अवैध तस्करी का समर्थन नहीं कर रही?

हमारी गोमाता को भोजन, पानी और सुरक्षा की आवश्यकता है, लेकिन उन्हें ये बुनियादी ज़रूरतें प्रदान करने के बजाय हम केवल दोषारोपण का खेल खेलते हैं। गाय के मालिकों को उनकी वर्तमान दुर्दशा के लिए दोषी ठहराते हैं। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि आज जो मॉल, पार्क, फुटपाथ और मेट्रो स्टेशन बने हैं, वे कभी गोचर भूमि थे जहाँ गायें बिना किसी बाधा के बैठती और घूमती थीं। समय के साथ गोचर भूमि कंक्रीट के जंगलों में बदल गई और अब गायें सड़कों पर घूमने और बैठने के लिए मजबूर हैं।

इसलिए गायों के मालिक अकेले दोषी नहीं। हमारे शहरी योजनाकार (Urban Planners) जिन्होंने दिल्ली जैसे आधुनिक शहरों को डिजाइन करते समय गायों और उनकी आवश्यकताओं को पूरी तरह से नजरअंदाज कर दिया, वे भी समान रूप से दोषी हैं।

कई लोगों द्वारा सुझाया गया एकमात्र समाधान यह है कि इन घूमती–फिरती गायों को सरकारी वित्तपोषित गौशालाओं में भेज दिया जाए जो आवासीय क्षेत्रों से बहुत दूर होती हैं। लेकिन क्या यह सही समाधान है? हमने देखा है कि कैसे सरकारी वित्तपोषित गौशालाएँ बाद में कुप्रबंधन और चारा घोटालों के कारण बंद हो जाती हैं। गायें अकसर भूख और कुपोषण से मर जाती हैं और अंततः बूचड़खानों में

पहुँच जाती हैं। इसलिए, हमें कॉलोनियों में और उसके आस–पास गौशालाएँ / गोचर भूमि बनाना चाहिए, जिनकी निगरानी और प्रबंधन गौ सेवकों (कॉलोनी निवासियों) द्वारा सामूहिक रूप से किया जाए, क्योंकि वे अकेले ही बिना किसी लालच के निस्वार्थ सेवा कर सकते हैं।

गायों की दुर्दशा के लिए गाय मालिकों को दोषी ठहराने के बजाय उनकी समस्याओं को समझने के लिए उनके साथ संयुक्त बैठक करने की आवश्यकता है। उन समस्याओं का समाधान करें और इसके साथ ही उनके लिए दंड के साथ सख्त दिशा–निर्देश बनाएं ताकि कोई भी गाय तस्करी के लिए सड़कों पर न छोड़ी जाए और न ही वह ऐसी मौत मरे जिसकी वह हकदार नहीं है, और न ही उसके दूध के लिए उसका शोषण किया जाए (कोई ऑक्सीटोसिन इंजेक्शन नहीं और कोई कृत्रिम गर्भाधान नहीं)। पुलिस को भी गाय के प्रति अधिक जिम्मेदार होना चाहिए, जो उनके लिए जानवर है, लेकिन अधिकतर भारतीयों के लिए, विशेष रूप से हिन्दुओं के लिए वह माता है। माता के साथ ऐसा व्यवहार कदापी उचित नहीं।

मैं अपनी गोमाता के लिए कुछ न कर पाने के कारण पराजित और असहाय महसूस करती हूं। उसके अपराधी आज भी बिना किसी अपराधबोध और भय के कई और निर्दोष और असहाय गोमाताओं को चुराने के लिए खुलेआम घूम रहे हैं। यह सनातन धर्म नहीं, अधर्म है। जब तक यह महापाप जारी रहेगा, विश्व गुरू भारत बनने का सपना, सपना ही रह जायेगा।

निराश्रित गोवंश के लिए दबंगों से चरागाह की जमीन मुक्त कराने की मांग

एटा (उत्तर प्रदेश)। विश्व हिन्दू परिषद, गोरक्षा विभाग के तत्वावधान में एक बैठक का आयोजन कैम्प कार्यालय शान्ति नगर, एटा पर शाम 6 बजे किया गया। बैठक की अध्यक्षता विश्व हिन्दू परिषद गोरक्षा विभाग के प्रान्त अध्यक्ष अरविन्द सिंह चौहान ने की। बैठक को सम्बोधित करते हुए श्री चौहान ने कहा कि पूरे ब्रज प्रान्त में चरागाह की जमीनों पर दबंग लोग कब्जा किये हुए हैं तथा निराश्रित गोवंश भूखा–प्यासा सडकों पर घूम रहा है तथा गोशालाओ मे गोवंश हरे चारे के लिए तड़प रहे हैं तथा चरागाह की जमीन पर कब्जा किये हुए लोग फल–फूल रहे हैं, जबकि माननीय मुख्यमंत्री जी के स्पष्ट आदेश हैं कि चारागाह की जमीनों को तत्काल कब्जा मुक्त किया जाये। लेकिन देखने में आया है कि कुछ अधिकारी तो अपना समय पास करने में जुटे हुए हैं तथा कुछ की मानसिकता ठीक नहीं है, इसलिए पूरे ब्रज प्रान्त में चरागाह की जमीन कब्जा मुक्त नहीं हो पा रही है। जनपद एटा में जिलाधिकारी महोदय एटा के सान्निध्य में शीतलपुर ब्लाक में मिलिक बन्हैरा गोशाला से लगी 32 बीघा जमीन कब्जा मुक्त कराकर ग्राम प्रधान को निराश्रित गोवंश के हरा चारा बुबाने के लिए सौंपी गई है। जिलाधिकारी महोदय की बहुत अच्छी पहल है, उनको हार्दिक साधुवाद।

श्री चौहान ने कहा कि ऐसी ही पहल अगर पूरे ब्रज प्रान्त में जिलाधिकारी करें तो निराश्रित गोवंश को चारे के लिए भटकना नहीं पडेगा तथा माननीय मुख्यमंत्री जी की प्राथमिकता का यह महत्वपूर्ण कार्यक्रम है। मुख्यमंत्री जी का जो सपना है कि निराश्रित गोवंश गोशालाओं में खुशहाल रहे वह सपना भी पूरा होगा। पूरे ब्रज प्रान्त के विश्व हिन्दू परिषद गोरक्षा विभाग के पदाधिकारी व कार्यकताओं से मेरा आग्रह है कि गौशालाओं से लगी चरागाह की जमीन जो दबंगो के कब्जे में है उनकी सूची बनाकर उपलब्ध करायें ताकि शासन व प्रशासन के सहयोग से खाली कराकर निराश्रित गोवंशो के चारे के उपयोग में ली जा सके। एटा जिलाधिकारी से अनुरोध है कि चरागाह की और भी जमीने पडी हुई हैं, उनको भी चिह्नित कर कब्जा मुक्त करवाई जाये ताकि उसका संपूर्ण लाभ निराश्रित गोवंश को मिल सके।

गोवंश हत्या-तस्करी रोकने के लिए प्रशासन तत्काल प्रभावी कार्यवाही करे

कासगंज (उत्तर प्रदेश)। भारतीय गोवंश रक्षण–संवर्द्धन परिषद ने एसडीएम विनोद जोशी को ज्ञापन सौंपा। ज्ञापन के माध्यम से जिले में गोवंश हत्या–तस्करी रोकने के लिए प्रभावी कदम उठाए जाने की मांग की। विभाग गोरक्षा प्रमुख कामता प्रसाद जी ने कहा कि देश में गोवंश की हत्या व तस्करी के मामले तेजी से बढ रहे हैं। जिले में भी ऐसे मामले सामने आते रहते हैं। कानून के बाद भी गोवंश तस्कर सक्रिय हैं, जो गोवंश की तस्करी कर रहे हैं। इसके साथ ही गोकशी के मामले भी होते रहते हैं। 7 जून को **बकरीद** का पर्व मनाया जाएगा। पर्व के मौके पर इस तरह की धटनाएं बढ़ जाती हैं। ऐसी घटनाओं को रोकने के लिए तत्काल प्रभावी कदम उठाए जाएं।

जिला गोरक्षा प्रमुख यतेंद्र कुमार कुलश्रेष्ठ ने कहा कि राज्य सरकार, पुलिस प्रशासन गोवंश हत्यारों व गोवंश तस्करों के खिलाफ कठोर कार्रवाई करे ताकि गोरक्षकों को सड़क पर आने को मजबूर न होना पड़े।

इस दौरान विजय लक्ष्मी, आलोक कुलश्रेष्ठ, हिमांशु कुमार, दीपक शर्मा, शिवम गहलोत, जगदीश, कुशाग्र माहेश्वरी सहित अनेक कार्यकर्ता उपस्थित थे।

सिलीगुड़ी से दिल्ली लाया जा रहा मांस से भरा कंटेनर जब्त

मैनपुरी (उत्तर प्रदेश)। सिलीगुड़ी से दिल्ली लाया जा रहा कथितरूप से करीब 22 टन गोमांस के पैकेटों से भरा कंटेनर गतमाह पुलिस ने पकड़ लिया। मांस की कीमत करीब 15 लाख रुपये है। मांस के नमूने जांच के लिए मथुरा एफएसएल भेजे गये हैं।

गोरक्षक दल के पदाधिकारी सुमित शर्मा ने पुलिस को जानकारी दी थी कि प्रतिबंधित मांस से भरा वातानुकूलित कंटेनर सिलीगुड़ी से दिल्ली के लिए आ रहा है। पुलिस ने लखनऊ–आगरा एक्सप्रेसवे पर घेराबंदी की। पुलिस ने कंटेनर रुकवाकर तलाशी ली तो उसमें 22 टन मांस के पैकेट भरे हुए थे।

चालक के पास मिले मछली दाना के कागजात :

चालक के पास से कथित रूप से इंडियन फ्रोजेन फिश प्रोडक्ट के नाम से मछली दाना के कागज मिले। उसके पास मात्र एक ई–वे बिल था। बिल पर डिस्पैच स्थान और पहुंचने वाला स्थान एक ही है। कंटेनर के अंदर लोड पैकिंग पर बफैलो मीट और कुछ पर अल्तमीज गोल्डन फिश मीट लिखा हुआ है।

सीओ सत्यप्रकाश ने चालक हरीकांत निवासी पंजाब से पूछताछ की तो उसने बताया कि वह पांच दिन पूर्व सिलीगुड़ी से 22 टन मीट के पैकेट लेकर दिल्ली के लिए निकला था। पशु चिकित्साधिकारी डा. अफरोज ने मांस का नमूना लिया। अपर पुलिस अधीक्षक राहुल मिठास ने बताया मीट का नमूना जांच के लिए भेजा जा रहा है। तहरीर मिलने पर प्राथमिकी दर्ज कराई जाएगी।

साभार : दैनिक जागरण

गोवंश के प्रबंधन पर विशेष ध्यान दिया जाएगा : रेखा गुप्ता

सचिवालय में डेरियों के प्रतिनिधियों, गोशाला संचालकों के साथ मुख्यमंत्री ने की बैठक

नई दिल्ली। दिल्ली में बेसहारा गायों की समस्या बड़ी परेशानी बनी हुई हैं, सड़कों पर बेसहारा गोवंश के आ जाने से दुर्घटनाएं भी होती हैं। गत दिनों हैदरपुर में खुद मुख्यमंत्री का काफिला भी इन गायों ने रोक दिया था। भाजपा सरकार ने इस समस्या के निदान के लिए पहल की है। मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने गत माह सचिवालय में दिल्ली भर के डेरी मालिकों को बुलाया और उनकी समस्याएं सुनीं। इस समस्या का हल निकालने के प्रयास के तहत आने वाले समय में कई योजनाओं पर काम करने की बात उन्होंने कही है। इस समस्या के लिए उन्होंने पूर्व की आप सरकार की उदासीनता को भी बड़ा कारण बताया है। कहा कि केजरीवाल सरकार ने गायों और डेरी मालिकों के संरक्षण के लिए कोई काम नहीं किया है। बैठक में विकास मंत्री कपिल मिश्रा भी मौजूद थे। बैठक में मुख्यमंत्री द्वारा की गई घोषणा के अनुसार, दिल्ली सरकार राजधानी की डेरी कालोनियों में सुविधाएं देने और गोवंश के प्रबंधन पर विशेष ध्यान देगी। अधिकृत डेरियों में पानी की व्यवस्था, नालियों की सफाई, सीवेज की व्यवस्था की जाएगी और बायो गैस प्लांट भी बनाए जाएंगे। इसके अलावा गोशालाओं का विस्तार किया जाएगा। नई गोशालाएं बनाई जाएंगी। सरकार सुनिश्चित करेगी कि कोई भी गाय या पशु सड़कों पर न घूमे और सभी को सुरक्षित, स्वच्छ जगह में रखा जा सके। उन्होंने जानकारी दी कि ***घुम्मनहेड़ा में आधुनिक सुविधाओं से युक्त माडल गोशाला स्थापित करने के लिए 40 करोड़ का बजट आवंटित किया गया है।***

वित्त का संकट

- ✓ करोड़ों रुपये खर्च होने के बावजूद गोशालाओं का शिकायत– कई महीनों से नहीं मिली धनराशि।
- ✓ गायों को पकड़कर गोशालाओं में ले जाने के लिए निगम के पास वाहनों की कमी, इससे गायों को चोटें लगती हैं।
- ✓ गायों की टैगिंग और ट्रैकिंग आवश्यक है।

बेसहारा गायों के लिए शहर में पांच आधिकारिक गोशालाएं

- ❖ सुरहेड़ा में डाबर हरेकृष्णा
- ❖ रेवला खानपुर में मानव गोसदन
- ❖ हरेवली में गोपाल गोसदन
- ❖ बवाना में श्री कृष्ण
- ❖ घुम्मनहेड़ा में आचार्य सुशील मुनि (बंद किया गया)

नोटः यहां रखी गई गई गाय के लिए प्रतिदिन 40 रुपये का भुगतान किया जाता है, 20 रुपये नगर निगम और 20 रुपये दिल्ली सरकार द्वारा दिए जाते हैं।

डेरियों के प्रतिनिधियों, गोशाला संचालकों, एमसीडी और पशुपालन विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ बैठक में मुख्यमंत्री ने कहा कि सरकार प्रभावी समाधान निश्चित करेगी। हमारी नैतिक जिम्मेदारी है कि जिन गोवंश को सड़कों से हटाकर गोशालाओं में भेजा गया है, उनकी देखभाल में कोताही न बरती जाए। इसके अतिरिक्त गोवंश के लिए साफ–सफाई, चारा, चिकित्सा और शरण की समुचित व्यवस्था के लिए सभी ठोस कदम उठाए जाएं।

बैठक में डेरी संचालकों ने समस्याएं रखीं और बताया कि डेरियों में पानी की समस्या गंभीर है। वहां सफाई का बुरा हाल, सीवर सिस्टम बेहद खराब और गोबर के प्रबंधन के लिए बनाए गए बायो गैस प्लांट चल नहीं रहे हैं या हैं ही नहीं।

Dr. Aastha Pathak

GOMATA
THE DIVINE BACKBONE OF INDIA

In the heart of India, the cow is not merely an animal — she is GOMATA, the revered mother. From ancient scriptures to the daily lives of millions of Indians , the cow holds an honored and indispensable place. She nourishes, sustains, and supports the traditional Indian way of life with silent dedication. Far beyond being just a domestic creature, GOMATA is the living symbol of dharma, selflessness, and sustainability.

A Cultural and Spiritual Emblem

The reverence for the cow in Indian culture is deeply rooted in the Vedas, Puranas, and epics like the Mahabharata and Ramayana. The Rigveda refers to cows as Aghnya, which means "not to be killed". Lord Krishna, who spent his childhood in the pastoral village of Gokul, is affectionately known as Govinda and Gopal — protector and friend of cows. Cows are often present in yajnas (Vedic rituals), symbolizing purity, prosperity, and divine blessings.

Every aspect of the cow is associated with auspiciousness. The panchgavya — a mixture of cow dung, urine, milk, curd, and ghee — is used in rituals and traditional medicines, and is believed to purify the environment and human consciousness. On festivals like Govardhan Puja, entire villages come together to worship and decorate cows, acknowledging their vital role in their lives.

Gau Mata as a Provider

In India, the cow is central to the agrarian lifestyle. She is the mother who feeds and nurtures the family, often referred to as annadaata (giver of food). Her milk is a primary source of nutrition, especially in villages where modern sources of protein are scarce. Milk, curd, ghee, and buttermilk are staples in every household and are considered sattvic, promoting purity of mind and body.

Ghee, made from cow's milk, is not only a cooking medium but a sacred offering in havans. In Ayurveda, cow ghee is considered a rasayana, promoting longevity, intelligence, and immunity.

For children, cow's milk is the first nutritious food after mother's milk, and for the elderly, it is a natural source of strength and vitality. Through her milk and its products, Gau Mata continues to serve her human children throughout their lives.

Natural Fertility: Her Gift to the Soil

In the age of chemical farming and environmental degradation, the cow emerges as a natural ally of sustainable agriculture.

Cow dung is an organic treasure, used in manure, biogas, pest repellents, and even construction.

Cow dung manure rejuvenates the soil, improving its fertility and water retention capacity without causing long-term harm, unlike chemical fertilizers. Many farmers in rural India continue to rely on this eco-friendly input, ensuring their fields remain productive and healthy.

Jeevamrut, a traditional organic fertilizer made using cow dung and urine, jaggery, and pulse flour, is gaining popularity even among modern organic farmers. It enriches the soil with beneficial microbes and promotes natural growth without harming the environment.

Eco-friendly Energy and Cleanliness

Cow dung is a renewable source of energy. In rural homes, dung cakes are still used for cooking, especially in areas without access to LPG. Gobar gas plants provide clean, smokeless fuel to households, reducing dependency on firewood and preserving forests.

The ash produced from cow dung cakes is used as a cleaning agent and even as a natural antiseptic in traditional Indian homes.

Floors in village huts are often smeared with a mixture of mud and cow dung, which repels insects and purifies the home environment. Science is now discovering what our ancestors intuitively knew — that cow dung has antibacterial and antifungal properties.

Role in Rural Economy

The cow is often the economic backbone of a rural household. Even a single cow can support an entire family. Milk production not only fulfills domestic needs but can also generate income through local dairy cooperatives. Many self-help groups (SHGs) and women's collectives have created sustainable livelihoods through dairy farming.

Moreover, Gau-based entrepreneurship is on the rise. Rural entrepreneurs now produce soaps, agarbattis (incense sticks), floor cleaners, and organic fertilizers using cow dung and urine. These products are gaining popularity not only in India but also internationally, bringing pride and profit to the villages.

Ecological Balance and Harmony

The cow, when respected and maintained naturally, contributes to the ecological balance. Unlike mechanized systems of production and consumption, the cow-based lifestyle promotes harmony with nature. She eats natural fodder, produces natural fertilizer, and helps grow healthy crops, completing a sustainable cycle. In a time of climate crisis, the cow represents a model of low-impact living. Cow-centric agriculture produces less carbon footprint, conserves water, and enhances biodiversity. She is, quite literally, a guardian of nature.

Gau Sewa : A Sacred Duty

Serving Gau Mata is considered one of the noblest acts in Sanatana Dharma. Temples and Gau-shalas across India uphold this dharma by caring for cows in a protected environment. These institutions not only shelter abandoned or aged cows but also preserve indigenous breeds, which are better suited to local climates and have higher medicinal value in their milk.

The government and several volunteer organizations now promote Gau Sewa and Gau Adharit Krishi (cow-based farming) as a path to rural rejuvenation. The Rashtriya Swayamsevak Sangh (RSS) and allied organizations have played an active role in promoting cow protection, awareness, and cow-centered livelihoods across Bharat.

Sanjay Raman "Vidyavachaspati"

VIBHOOTI

THE SACRED SCIENCE OF COW-DERIVED ASH

Vibhooti, traditionally known as Bhasma or sacred ash, occupies a venerable space in Hindu spirituality. Particularly when prepared from cow dung and derivatives like milk and ghee, Vibhooti transcends mere ritual substance and emerges as a profound symbol of purity, divinity, environmental symbiosis and philosophical reflection. Its use is deeply woven into the spiritual fabric of Hindu daily life, from puja and yajna to meditation and pilgrimage, reflecting a timeless integration of ecological wisdom and metaphysical thought.

The sanctity attributed to Vibhooti prepared from cow dung is not arbitrary but is rooted in both ancient texts and practical observations of nature's processes. The cow (Gau Mata) is exalted in Hindu tradition not just as a maternal figure of nourishment and compassion but as an ecological cornerstone. Cow dung, far from being a waste product, is a biologically rich substance containing a diverse array of microorganisms, enzymes and minerals. Scientific studies have shown that dried cow dung contains beneficial bacteria like **Bacillus subtilis and Lactobacillus**, which exhibit antimicrobial properties capable of inhibiting harmful pathogens. When cow dung is combusted to ash (under typical open fire or controlled burning conditions i.e., low-to-moderate temperature combustion), volatile organic compounds and pathogens are neutralized, while essential minerals such as potassium, magnesium, calcium and phosphorus remain in concentrated form. This mineral-rich ash, when applied externally, is believed to exert antiseptic and antifungal effects, a traditional practice that modern microbiology increasingly corroborates.

Beyond its biological composition, Vibhooti carries profound environmental benefits. In a world grappling with chemical fertilizers and synthetic disinfectants, cow dung stands out as a biodegradable, renewable resource. It improves soil fertility by enhancing nitrogen fixation and enriching microbial diversity when returned to the earth. The practice of using cow dung to prepare sacred ash, therefore, subtly integrates ritual with ecological responsibility, creating a closed-loop system where nothing is wasted. This echoes the ancient Hindu ethos of **Prithvi Sanrakshan,** protection and preservation of the Earth.

Philosophically, Vibhooti acts as a potent metaphor for the cycle of life, death and transcendence. Ash is the final residue

after combustion, symbolizing the dissolution of all material forms. The act of smearing Vibhooti on the forehead, particularly on the space between the eyebrows **(Ajna Chakra)**, is not merely devotional; it is deeply meditative. It serves as a tangible reminder of the impermanence of worldly possessions and ego-bound identity, aligning with the Vedantic concept of **neti-neti** (not this, not this), the progressive negation of all that is transient in pursuit of the ultimate truth. The grey-white color of the ash visually represents the transition from multiplicity to unity, from form to formlessness, inspiring the seeker to focus on higher consciousness.

From a chemical standpoint, when cow dung is mixed with ghee and subjected to controlled combustion, a process akin to low-temperature pyrolysis occurs. This method minimizes the production of harmful carbon monoxide and enhances the yield of carbon-rich ash. Trace elements such as zinc and copper, both known for their skin-protective and antimicrobial properties, also become bioavailable in the ash. Traditionally, this Vibhooti is applied to skin ailments such as eczema, fungal infections and minor wounds. While empirical validation in modern clinical terms remains ongoing, Ayurvedic texts like **Charaka Samhita** and **Sushruta Samhita** frequently describe ash-based poultices for skin purification and wound healing.

The olfactory aspect of burning cow dung mixed with ghee also holds scientific relevance. Studies have shown that burning dried cow dung releases phenols and formaldehyde, compounds that possess disinfectant properties. This is perhaps why fumigation of homes and temples using cow dung cakes has been a long-standing practice to purify spaces, a method surprisingly resonant with contemporary interest in natural air purification. Moreover, the combustion process emits negative ions, molecules that have been linked to improved mood, reduced stress and enhanced mental clarity. Thus, the sensory dimensions of Vibhooti-making intertwine with subtle neurobiological benefits that were intuitively recognized by ancient practitioners.

Culturally, the use of cow-derived products in Vibhooti-making underscores the Hindu worldview that venerates nature in all its forms. The cow, regarded as **Kamadhenu,** the wish-fulfilling celestial being, is honored for her life-sustaining gifts. By transforming cow dung into sacred ash, devotees not only pay homage to the maternal cow but reaffirm a way of life that harmonizes human activity with ecological stewardship.

Nevertheless, it is imperative that these practices are anchored in ethical considerations. Humane treatment of cows and hygienic management of cow-derived products are non-negotiable principles that safeguard the sanctity of the tradition. Modern practitioners are increasingly mindful of these factors, balancing reverence for cultural continuity with contemporary standards of animal welfare and public health.

Ultimately, Vibhooti is more than just ash; it is a convergence of science, spirituality and sustainability. It embodies an ancient understanding that reverence for life, in its simplest and most elemental forms, can purify both the inner and outer worlds. Its enduring relevance lies in the seamless blend of ritual depth and ecological intelligence, serving as a testament to the holistic vision that has guided Hindu thought across millennia.

हार्दिक निवेदन

सभी गोभक्त–गोप्रेमी बंधुओं से करबद्ध अनुरोध है कि वे इस पत्रिका का सदस्य अवश्य बनें और अन्य गोभक्तों को भी सदस्य बनायें। कृपया सभी लोग अपना वार्षिक अथवा आजीवन सदस्यता शुल्क निम्नलिखित बैंक व खाता नंबर में जमा कराएं –

पंजाब नेशनल बैंक, बसंत लोक, नई दिल्ली

खाता नम्बर - 04072010038910 IFSC CODE : PUNB0040710

नोट – शुल्क "भारतीय गोवंश रक्षण संवर्द्धन परिषद" के नाम पर जमा करें। सम्पर्क सूत्र : 011.26174732

pnb punjab national bank
...the name you can BANK upon!

अब आप यूपीआई के माध्यम से भी पत्रिका का शुल्क जमा कर सकते हैं

SCAN & PAY USING ANY BHIM UPI APP

9958710672m@pnb

MERCHANT: BHARTIYA GOVANSH RAKSHAN SAMVARDHAN PARISHAD

BHIM BHARAT INTERFACE FOR MONEY | UPI UNIFIED PAYMENTS INTERFACE

गोवंश-माहात्म्य

देशी गो संरक्षण-संवर्धन हित, साँप-सीढ़ी प्रारूप में, साटन कपड़े पर गो महिमा-महत्ता अंकित साधना करने के लिये आसन

1	गोचर रक्षण में भागीदारी से	देव परिक्रमा का फल
2	गोशाला में गोकथा करवाने से	माँ सरस्वती की दया
3	गऊ-शाला की नित्य सफाई से	विपदाओं का खात्मा
4	गोहत्या रोकने के प्रयास करने से	प्रेत व्याधि से बचाव
5	गोशाला में ईश आराधना करने से	गऊ लोक की प्राप्ति
6	गो-माता को हरा चारा खिलाने से	गऊ-लोक में वास
7	गोचर में सघन पौधारोपण करने से	सरस्वती जी प्रसन्न
8	देशी गो की नित्य परिक्रमा करने से	प्रतिष्ठा में बढ़ोतरी
9	गोशाला निर्माण में योगदान करने से	सकारात्मक ऊर्जा
10	देशी गो के पंचगव्य उपयोग करने से	इंद्रलोक की प्राप्ति
11	गोशाला में चारे की व्यवस्था करने से	कर्ज का निपटान
12	गो साहित्य का प्रचार-प्रसार करने से	पारिवारिक शांति
13	देशी गो का नित्य प्रति दर्शन करने से	कीर्ति में बढ़ोतरी
14	देशी गो के क्षीर को परमौषध मानने से	सनातन की रक्षा
15	देशी गो को सहलाने, परिचर्या करने से	परिवार में संतोष
16	गो सेवा के भाव बच्चों में जाग्रत करने से	ओज में बढ़ोतरी
17	गो आतताइयों को हतोत्साहित करने से	लक्ष्मी जी प्रसन्न
18	देशी गो के कंडे एवं घी से हवन करने से	कष्टों का शमन
19	देशी गो संवर्धन हित नंदी तैयार करने से	धरती माँ प्रसन्न
20	गऊ-चिकित्सालय की व्यवस्था करने से	शारीरिक कांति
21	गो-माता को लापसी/दलिया खिलाने से	रोगों से निर्वाण
22	गो, गोवत्स एवं गोपालकों को सम्मान देने से	इंद्रदेव की दया
23	गो-माता हेत शीतल छाया का प्रबंध करने से	शौर्य की प्राप्ति
24	गो-माता के लिए ठाण-खेळी/टांका बनाने से	निरोगी जीवन
25	गो-माता हित चारे-पानी की व्यवस्था करने से	वंश बढ़ोतरी
26	देशी गो की पग-रज का नित्य तिलक लगाने से	पितर प्रसन्न
27	देशी गो के झरण से आचमन एवं स्नान करने से	यश वर्धन
28	गो-माता को सर्द-गर्म से बचाने के कार्य करने से	राजयोग

- नवल डागा

"LPC DELHI, DELHI PSO, DELHI RMS, DELHI-6"
Email : gosampada@gmail.com
website : www.vhp.org

Registered No. DL-SW-01/4027/24-26
RNI No. 69508/98 प्रस्तुति : 13–14
प्रकाशन तिथि : 11 जून, 2025

गोमाता को राष्ट्रमाता घोषित करने का प्रस्ताव पारित

गोरक्षा विभाग, दिल्ली की प्रांतीय बैठक संपन्न

विश्व हिंदू परिषद, गोरक्षा विभाग दिल्ली प्रांत की एक दिवसीय प्रांतीय बैठक गत 4 मई 2025 (रविवार) को प्रांत के दायित्ववान कार्यकर्ताओं की उपस्थिति में व्हाट्स पेटल्स बैंक्विट हॉल, बृजपुरी, मैन वजीराबाद रोड, दिल्ली, यमुना विहार विभाग में संपन्न हुई। बैठक में विश्व हिंदू परिषद के केंद्रीय मंत्री एवं अखिल भारतीय गोरक्षा प्रमुख मा. दिनेश उपाध्याय जी, क्षेत्रीय संगठन मंत्री, विश्व हिंदू परिषद मुकेश विनायक खांडेकर जी, इंद्रप्रस्थ क्षेत्र गोरक्षा प्रमुख सतीश चौधरी जी, केंद्रीय मंत्री डॉ विवेक कुमार जी, केंद्रीय मंत्री सुरेंद्र लम्बा जी, गोरक्षा प्रमुख जगबीर गौर जी, प्रांत गोरक्षा सह प्रमुख विजेंद्र तंवर जी, एवं देशी गोवंश रक्षण संवर्धन न्यास के प्रांत अध्यक्ष प्रमोद सिंघल जी, उपाध्यक्ष प्रमोद कंसल जी, महामंत्री नीरज अग्रवाल जी, प्रांत सह मंत्री बहन अन्नू अग्रवाल जी, विभाग अध्यक्ष यमुना विहार विभाग माननीय चक्रेश अग्रवाल जी, कोषाध्यक्ष जितेन्द्र कुमार मिश्रा जी, सह कोषाध्यक्ष मनोज कुमार झा जी, गोरक्षा सह प्रमुख रणवीर जी, गोशाला प्रमुख अशोक सोलंकी जी, विधि सह प्रमुख एस के राघव जी एवं बहुत से गोभक्त, पूज्य संत और प्रांत के अनेक कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

प्रथम सत्र मुकेश विनायक खांडेकर जी, द्वितीय सत्र सुरेंद्र लम्बा जी और तृतीय सत्र मा. दिनेश उपाध्याय जी के सान्निध्य में संपन्न हुए। बैठक में गोमाता के संरक्षण और संवर्धन संबंधित विषय पर आधारित कार्य के सफल प्रयास हेतु योजनाओं, ट्रस्ट की संगठनात्मक रचना, कार्य एवं दायित्व बोध पर मार्गदर्शन किया गया। इसमें गोसंपदा से उत्पाद और उत्पादन की गुणवत्ता और उत्पादित वस्तुओं को देश में वितरण से संबंधित बातों को बताया और समझाया गया, यह भी बताया गया कि कृषि में किस प्रकार से हम गोवंश से प्राप्त गोबर एवं गोमूत्र से खेती कर सकते हैं जो हम सभी के लिए बहुत ही लाभकारी है। समाज, देश की वर्तमान स्थिति पर चिंतन मनन के साथ न्यास द्वारा **गोमाता को राष्ट्रमाता** की घोषणा हेतु स्थानीय प्रशासन को न्यास से पारित प्रस्ताव दिए जाने की सर्व सहमति हुई।

गोरक्षा प्रमुख मा. जगबीर गौर जी ने मंच का संचालन किया और आए हुए सभी पदाधिकारियों का परिचय कराया और दिल्ली में गोवंश रक्षण और संवर्धन किस प्रकार किया जा रहा है उसके बारे में अगवत कराया। अंत में न्यास के प्रांत अध्यक्ष प्रमोद सिंघल जी ने अपने विचार रखकर बैठक का समापन किया।

प्रस्तुति : गोरक्षा प्रमुख, जगबीर गौर

प्रकाशक व मुद्रक राजेन्द्र प्रसाद सिंहल ने रायल प्रेस, बी 81, ओखला इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस-1, नई दिल्ली से मुद्रित कर भारतीय गोवंश रक्षण संवर्धन परिषद् (विहिप) संकटमोचन आश्रम, सेक्टर-6, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली-22 के लिए प्रकाशित की। संपादक - देवेन्द्र नायक